डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

पाठ्य सामग्री – बीए हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, अष्टम पत्र

शब्द – शक्ति एवं उसके प्रमुख भेद

शब्द में निहित अर्थ से ही संप्रेषण संभव हो पाता है। आचार्य भामह ने साहित्य की परिभाषा इस प्रकार दी है –

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"

इस परिभाषा के माध्यम से साहित्य में शब्द और अर्थ की महत्ता को समझा जा सकता है। शब्द के माध्यम से ही भावों की अभिव्यक्ति होती है। इस अभिव्यक्ति में शब्द में निहित अर्थ की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शब्द के अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति को शब्द – शक्ति कहते हैं। शब्द – शक्ति तीन प्रकार की होती है –

अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

मुख्यार्थ का बोध कराने वाली शब्द – शक्ति अभिधा कहलाती है। सामान्य भाषा – व्यवहार में अभिधा का अधिक प्रयोग किया जाता है। काव्य में अभिधा को अधिक महत्व नहीं दिया गया है। परंतु अनेक प्रसंगों में अभिधा भी काव्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

जिस शब्द – शक्ति में मुख्यार्थ में बाधा पड़ती है, रूढ़ि अथवा प्रयोजन से अर्थग्रहण होता है वहाँ लक्षणा शब्द – शक्ति होती है। मुख्य रूप से लक्षणा के दो भेद हैं – रूढ़ि लक्षणा और प्रयोजनवती लक्षणा।

रूढ़ि लक्षणा – मुख्यार्थ की बाधा होने पर जहाँ रूढ़ि के कारण अर्थ – ग्रहण होता है, वहाँ रूढ़ि लक्षणा होती है।

प्रयोजनवती लक्षणा – जहाँ विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए लाक्षणिक शब्द का प्रयोग किया जाता है वहाँ प्रयोजनवती लक्षणा होती है।

प्रयोजनवती लक्षणा के भी दो भेद हैं –

गौणी लक्षणा और शुद्धा लक्षणा

गौणी लक्षणा में मुख्यार्थ की बाधा होने पर सादृश्य संबंध के आधार पर अर्थ प्राप्त होता है। गौणी प्रयोजनवती लक्षणा के दो उपभेद हैं-

सारोपा गौणी और साध्यवसाना गौणी

सारोपा में मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होती है। सादृश्य संबंध के आधार पर अन्य अर्थ प्राप्त होता है। इसमें उपमेय और उपमान दोनों का स्पष्ट कथन होता है।

साध्यवसाना में मुख्यार्थ में बाधा आती है, सादृश्य संबंध के आधार पर अर्थ प्राप्त होता है। इसमें केवल उपमान का स्पष्ट कथन होता है।

शुद्धा लक्षणा –

मुख्यार्थ की बाधा होने पर सादृश्य के अतिरिक्त अन्य कारणों से जहाँ लक्ष्यार्थ की प्राप्ति होती है, वहाँ शुद्धा लक्षणा होती है।

शुद्धा लक्षणा के दो प्रमुख भेद हैं –

उपादान लक्षणा और लक्षण – लक्षणा

उपादान लक्षणा में मुख्य अर्थ की बाधा होने पर भी मुख्य अर्थ पूरी तरह नहीं छूटता है बल्कि थोड़ा बना ही रहता है, साथ ही अन्य अर्थ भी खींच लेता है। अपना मुख्य अर्थ पूर्णतः नहीं छोड़ने के कारण उपादान को 'अजहत स्वार्था' भी कहा जाता है।

लक्षण लक्षणा में मुख्यार्थ की बाधा होने पर सादृश्य के अतिरिक्त अन्य संबंधों के आधार पर अर्थ – ग्रहण होता है। यहाँ मुख्यार्थ पूर्ण रूप से छूट जाता है, इसलिए लक्षण लक्षणा को 'जहत स्वार्था' भी कहा जाता है।

तीसरी शब्द – शक्ति है व्यंजना।

व्यंजना में न तो सीधा अर्थ होता है और न ही मुख्यार्थ में बाधा पड़ती है बल्कि व्यंजना से अर्थ का बोध होता है। अभिधा और लक्षणा शब्द के व्यापार हैं, जबकि व्यंजना शब्द और अर्थ दोनों का व्यापार है। व्यंग्यार्थ का बोध कराने में कभी शब्द की प्रमुखता होती है और कभी अर्थ की। जहाँ शब्द की प्रधानता होती है वहाँ शाब्दी व्यंजना होती है और जहाँ अर्थ की प्रधानता होती है वहाँ आर्थी व्यंजना होती है।

शाब्दी व्यंजना के दो भेद हैं –

अभिधामूला शाब्दी व्यंजना

लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना

अभिधामूला शाब्दी व्यंजना में अभिधा शक्ति द्वारा शब्द का मुख्यार्थ जान लेने के बाद उन्हीं वाचक शब्दों से एक अन्य अर्थ प्राप्त होता है।

लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना में मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होती है, लक्षणा शक्ति से अन्य अर्थ की प्राप्ति होती है तत्पश्चात प्रसंग इत्यादि से व्यंग्यार्थ का बोध होता है।

आर्थी व्यंजना में वक्ता, देश – काल, चेष्टा आदि की विशेषता के कारण वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ से आगे अन्य अर्थ का बोध होता है। आर्थी व्यंजना में व्यंग्यार्थ की प्रतीति प्रकरण से होती है। ये प्रकरण दस माने गए हैं।

आर्थी व्यंजना के तीन भेद हैं –

वाच्य संभवा, लक्ष्य संभावा और व्यंग्यसंभवा

वाच्यसम्भवा में प्रकरण ज्ञात होने पर वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ उत्पन्न होता है।

लक्ष्यसंभवा में सर्वप्रथम अभिधा के द्वारा वाच्यार्थ की प्रतीति होती है, पर मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होती है, तत्पश्चात लक्ष्यार्थ की प्रतीति होती है। लक्ष्यार्थ से प्रकरण आदि के आधार पर अन्य अर्थ की प्रतीति होती है।

व्यंग्यसंभवा में मुख्यार्थ प्रतीत होने पर प्रकरण आदि से व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है तत्पश्चात पुनः व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है।